श्री लक्ष्मी वन्दना

जय जय जय माँ लक्ष्मी भवानी
विष्णु प्रिया तुम जगत की माता ,
तुम हो मातु सकल जग त्राता ,
तुम्हरी कृपा चहत सब प्रानी ।
जय जय जय माँ.....
तोहिके पूजत शिव ब्रह्मादी ,
तोहिके मध्य न अन्त न आदी ,
गावत गुन सुर नर मुनि ज्ञानी ।
जय जय जय माँ.....
तोहिके महिमा अपरम्पारा ,
पल में सकल सृष्टि रचि डारा ,
महिमा अमित न जाइ बखानी ।
जय जय जय माँ.....
सेवत चरन सुलभ फल चारी ,
जो नहिं सेवत बनत भिखारी ,
सकल जगत महिमा यह जानी ।
जय जय जय माँ.....
ब्रह्मेश्वर तव दास कहावा,
महिमा निज मुख कछु कर गावा,
कृपा तोहार न जाय बखानी ।
जय जय जय माँ.....



ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
आरा, भोजपुर, बिहार

सांझ-सवेरे भोले



सांझ-सवेरे मन ये मेरा,
भोले-भोले जपता है,
अक्षर-अक्षर शिव के रंग में,
होले-होले तपता है।
सांझ-सवेरे ....
जब-जब धरा का मौसम बदले,
रोम-रोम खिल जाते हैं,
कण-कण में भोले के निखरे,
रूप नजर आ जाते हैं।
सांझ-सवेरे ....
जब-जब हम भोले से मिलते,
मन का साज जवां होता है,
भोले ही तन-मन में होते,
फिर कोई और कहां होता।
सांझ-सवेरे .....
भोले की सुध में डूबा मन,
पल-पल डुबकी लेता है,
पलक झपकती है पल-पल,
मन बोलते-बोलते कहता है।
सांझ-सवेरे ...
तेरा-मेरा जीवन सारा,
मंद-मंद मुस्काता है,
डूब के भोले की भक्ति में,
जीवन सारा तर जाता है।
सांझ-सवेरे ...
(290/348 वां मनका)

कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी 'राम'
गांधीनगर इन्दौर (म.प्र.)

हैं मीत दीये !

सुख - दुःख के -
हैं मीत दीये ।

खुशियों में -
खुश हो , जल जाते ।
दुःख में -
आंसू ये छलकाते ।

निभा जाते -
हर प्रीत दीये ।

घरों का -
तम न देखा जाये ।
जलकर -
राख हो शिखा जाये ।

हृदय से -
करते प्रीत दीये ।

हवामहल -
ये रोशन करते ।
आंधियों में -
महफूज रहते ।

शिखा के -
गाते गीत दीये ।

आजीवन -
साथ निभायें हम ।
इन्हें -
भुला नहीं जाये हम ।

बुझते -
हृदय को जीत दीये ।



अशोक आनन मक्सी

दलील का जमाना

है आजकल बंधुओ
रील का जमाना।

हो इंस्टाग्राम
या हो फेसबुक।
अपना-अपना है
ये आउटलुक।।

समझदार बच्चों को
ढील का जमाना।

वाद औ
फाइल होती याचिका।
हवा लगती
समाचार वाचिका।।

हुई कोर्ट-कचहरी
वकील का जमाना।

बात-बात पर
कलंक लगता है।
ज्यों तर्तैया का
डंक लगता है।।

तुम गुमसुम न हो अब
दलील का जमाना।

अविनाश ब्योहार
जबलपुर मप्र

जीवन का आधार



परिवार
फूलों की वाटिका में
खिले
रंग-बिरगी सतरंगी
फूल
पनपे हर दिन
स्नेह, एकता, सद्भाव
की त्रिवेणी
खुले विचारों की
चले समीर
आपदा-विपदा के
समर में
टूटे न मन का तार
बहकाने से
न भटके
समझदारी
हर बात समझाए
सादगी व संस्कारो
से
अपना जीवन बिताए
जन-जन में
जयघोष की
अनेकता में एकता
जीवन का सार
टूटे न मनोबल
न हो मन की हार
जय और जीत
ही है '' जीवन का आधार''

प्रदीप शर्मा,
24 नर्मदा मार्ग,
महेश्वर, खरगोन

तिरछे तीखे नयन शराबी
मदमाती सी चाल नवाबी !!
मीठा मीठा रस छलकाये
भरे भरे तेरे गाल गुलाबी !!

हुस्न गजब का पाया तूने
तेरा ना कोई और जबाबी !!
अदायें तेरी हिरणी जैसी
बदन गठीला लगे शबाबी !!

काली काली सी घुँघराली
उड़े हवा में जुल्फें रूबाबी !!
करे इशारे कमर कमरधनी
चढ़ी हुई हो जैसे रकाबी !!
चाँद के जैसा चेहरा तेरा
मूरत कोई लिखी किताबी !!
दमके गौरी आफताब सी
लगती तू कोई हूर ख्वाबी !!



सुदामा दुबे
बावरी सीहोर म प्र

वो चंद अहसास जो कभी



हमारे हुआ करते हैं
पता नहीं कब कैसे और क्यों
किसी और के बन जाते हैं

भीगी मिट्टी में ढले हुए वो सांचे
जब आकार लेते हैं भावनाओं के
पता नहीं कब कैसे और क्यों
खुद से दूर नहीं हो पाते हैं

प्रेम के ठहरे हुए पलों में जैसे
इंसान सब कुछ भूल जाना चाहता है
पता नहीं कब कैसे और क्यों
अतीत के दर्द आँखों को भिगो जाते हैं

वर्षा वार्ष्णेय अलीगढ़

शज़र

लब पे शीरीं लहज़ा, दिल में ज़हर लेकर।
हर शख़्स शामिल है यहाँ ये हुनर लेकर।।

मासूम ही रह गए ख़्वाब मेरे।
फिर आ गया सूरज सहर लेकर।।



यूँ महकने लगी है गली मेरी।
सबा आई है तेरी ख़बर लेकर।।

कहाँ बे-मौसम बरसते हैं नयन मेरे।
यादें आई हैं उनका असर लेकर।।

ये दौर-ए-हिज्र जो ख़त्म नहीं होता।
क़दम आ गए फिर नया सफ़र लेकर।।

आदत बना ही लेनी है अब धूप सहने की।
सफ़र पे कौन निकला है घर से शजर लेकर।।

शायद इसी लिए है ख़लिश अपनों को यहाँ।
हम गाँव चले आए हैं जो शहर लेकर।।

बाली उमर की इक ख़ता की कैसी है ये सज़ा।
कांधे पे ख़ुद को ही चले हम उम्र-भर लेकर।।

पहले ही हाल दुश्वार था बहुत 'अक्स'।
आईने लौट आए फिर काफ़िर नज़र लेकर।।

नितिन पुरोहित उज्जैन अक्स

ईद की हसरत दिवाली



मयकदे में आरज़ू बस रिंद वाली चाहिए।
तश्नगी का इम्तिहाँ है चाहिए।।

हैं जहन में अनगिनत अशआर बेतरतीब से।
मुझमें ग़ालिब है जिसे, बस एक ग़ज़ली चाहिए।।

वो तो हम ही फ़र्क़ पैदा कर रहे हैं बांट कर।
ईद की हसरत है, तोहफ़े में दिवाली चाहिए।।

इश्क़ की मोहरें हैं लाखों गिन्नियां जज्बात की।
खोल दूं सारा ख़ज़ाना इक सवाली चाहिए।।

सोच में उसके फ़क़त सूखे हुए टुकड़े हैं कुछ।
ख़्वाब में भूखों को कब रोटी रुमाली चाहिए?

अस्त से निस्बत किसे है आरजी की चाह है।
बस चमक रुख़सार पे, होठों पे लाली चाहिए।।

प्रणय प्रभात(मध्य-प्रदेश)

ऋणानु बंधन

जिंदगी में किसी शक्ति या मनुष्य का मिलना,
बिछड़ना सब हमारे ऋणानु बंधन से होता है।
कब ,कौन ,कहां, मिलना ,बिछड़ना, सब
तय होता है ऋणानु बंधन के द्वारा
फिर चाहे वहां पशु पक्षी के रूप में हो या
मनुष्य के रूप में।

सफलता का मिलना,असफलता प्राप्त होना
पड़ोसी का मिलना,कार्य क्षेत्र में लोगों का मिलना
प्रेम का मिलना, अपनेपन का मिलना भी
ऋणानुबंधन है।
माता-पिता, पति, बच्चे, पुत्र पुत्री,
रिश्तेदारों का मिलना सभी का
जीवन में आना ही ऋणानु बंधन है।
पेड़ों की सेवा, सहवास का प्रेम, आनंद ,
हम कभी भूल नहीं पाते हैं, यह सब हमारा
ऋणानु बंधन ही होता है।

श्रीमती सीमा ढोक इंदौर म प्र

दोहा छंद

जितना बने विनम्र हम, उतना मिटे विकार।
यह जीवन का सत्य है, मित्र इसे स्वीकार।।

गुरुवर अपने ज्ञान से, करते सभी निदान।
अवगुण में गुण खोजिए, वे सिखलाते ज्ञान।।

बात करें संक्षेप में, सरल सरस अभिसार।
जिसे समझना हो सरल, प्रेम भरा उपहार।।

अहं अगर किंचित रहे, समझो बिगड़े काम।
सार शब्द नित बोलकर, जपिए राजा- राम।।

रें समीक्षा गुरु सदा, तजकर निज अभिमान।
वही मिटाते भेद सब, देकर अपना ज्ञान।।

सेवा करिए दीन की, सबको देकर प्यार।
यही सिखाते गुरु सदा, फिर अंतस उजियार।

समय बड़ा बलवान है, इसका रखिए ध्यान।
लौट नहीं फिर से मिले, कहते संत सुजान।।

करें कुतर्की तर्क जो, बिना बात की बात।
उसे मिले कुछ भी नहीं, जैसी काली रात।।

जितना बनें विनम्र हम, उतना बढ़े निखार।
उसी सहारे है! सखे, जीवन नैया पार।।
नमन करूँ मैं ईश को, पकड़े रहना हाथ।
भटकूँ जो संसार में, मिले तुम्हारा पाथ।।

विनोद बनारसी वाराणसी उत्तरप्रदेश

ख्वाब सुहाने

आओ देखें ख्वाब सुहाने ,
जिसमे हों कुछ सुन्दर गाने।

मन को सदा लुभाते हैं जो ,
ऐसे सुन्दर ताने बाने।

मन से जो अवसाद हटा दें ,
ऐसे खुशियों के अफ़साने।

तोड़ें जो मन के दुख जाले ,
सुख के जो साथी अनजाने।

आते हैं जब पल खुशियों के ,
लाते हैं वो ख्वाब सुहाने।

महेंद्र कुमार वर्मा भोपाल [म.प्र.]
मो 9893836328

समय का जीवन

समय बड़ी जल्दी
उम्रदराज़ हो जाता है।

भोर में वह किसी नवजात
स्वप्न की तरह आँखें खोलता है
कोमल, कमसिन,ओस में
भीगी कच्ची कली-सा।

फिर धीरे-धीरे सूरज उसके कंधों पर
जिम्मेदारियों का आकाश रख देता है।
वह चलता है तपती धूप में भी,
बिना शिकायत,जैसे कोई जवान
अपने हिस्से का युद्ध
पूरी शक्ति से लड़ रहा हो।

दोपहर तक समय के चेहरे पर
अनुभव की रेखाएँ उतरने लगती हैं।
जो सुबह तक सपना था,
वह अब जीवन का यथार्थ है।

और फिर साँझ में समय एक गृहिणी-सा
दिन भर की थकान समेटकर
देहरी पर खड़ा मिलता है
पाँव थके हुए, कंधे बोझिल,
पर होंठों पर मुस्कान।

शायद जीवन की सबसे बड़ी विडंबना
यही है कि थक जाने के बाद भी
मनुष्य मुस्कुराना नहीं छोड़ता।

और रात होते ही वही समय
अचानक बूढ़ा हो जाता है।

खामोश...निःशब्द...जैसे कोई अधेड़
अपनी खाट पर लेटा दिन भर का हिसाब
बिना किसी से कहे मन ही मन करता हो।

एक ही दिन में समय हमें
जन्म से वृद्धावस्था तक ले जाता है।

तभी तो लगता है समय गुजरता नहीं,
हम गुजरते हैं।

घड़ी की सुइयाँ केवल अपनी
जगह बदलती हैं, पर उनके साथ
हमारी उम्र, हमारे स्वप्न,हमारे संबंध
और अंततः हम स्वयं
थोड़े-थोड़े कम होते जाते हैं।

समय की सबसे बड़ी सच्चाई शायद यही है
वह कभी बूढ़ा नहीं होता, बूढ़े तो हम होते हैं;
वह केवल हर दिन हमें हमारा एक दिन
कम करके हमारी पूरी उम्र का
अर्थ समझाता रहता है।



सविता सिंह 'मीरा'
जमशेदपुर

सफ़र

सुलगती रही है ज़िंदगी मेरी
गीली लकड़ी की तरह आज तक
ख्वाहिशों और उम्मीद की आग में.....
गुम हो गए हैं गुजरते वक़्त के साथ
बुने हुए बहुत ख्वाब
वह गए हैं आंसुओं के साथ
तो कुछ ख्वाब
गुम हो गए हैं धुएं में.....
आमादा रहा है तोड़ने को हौसला
हर इम्तिहान में वक़्त मेरा
जानता था अगर टूट गया हौसला
बिखर जाएगा वजूद मेरा
नहीं समेट पाऊंगा
उसको फिर से ज़िंदगी में.....
मैंने खुद को बिखरने नहीं दिया
वक़्त ने होने ही नही दिया अहसास
सूखने का कभी मुझे
करने को पूरी ख्वाहिशें और उम्मीद
रोशनी के साथ पूरी आग
में.....
सुलगती रही है ज़िंदगी मेरी
गीली लकड़ी की तरह आज तक
जद्दोजहद से भरे ज़िंदगी के सफ़र में.....



सुधीर केवलिया

हँसते चेहरे

बेबाक़ बोल एस.पी. सिंह

मेरे हँसते चेहरे के पीछे,
एक दर्द पुराना रहता है।

महफ़िल में हँसता हूँ अक्सर,
दिल तन्हा रोता रहता है।

आँखों में ख़्वाब सजाए हैं,
सीने में धुआँ-सा रहता है।

लब ख़ामोशी ओढ़े बैठे हैं,
अंदर इक शोर मचा रहता है।

सब पूछें हाल खुशी का ही,
कौन दर्द समझता रहता है।

रातों की वीरानियों में,
एक अक्स पुकारा करता है।

टूटे ख़्वाबों की किरचों से,
दिल रोज़ लहूलुहान रहता है।

दुनिया को हँसकर मिलता हूँ,
खुद से मिलना मुश्किल रहता है।

कुछ जख़्म समय भी भर न सका,
कुछ दर्द दुआ में पलता है।

हर अश्क छुपाकर रखता हूँ,
चेहरा मगर हँसता रहता है।

बेबाक़ अपनी ख़ामोशी में,
इक पूरा अफ़साना रखता है।



एस. पी. सिंह
अंबाला शहर
7206 333 070

शक्ति ही बन बैठे भक्षक

जिस थाने में सुरक्षा की उम्मीद ले आई,
वहीं इंसानियत शर्मसार करने हो आई।
जिस वर्दी पर विश्वास जताया था उसने,
उसी 'वर्दी' पर सवालों की बौछार आई।

यूं पति के अत्याचारों से बचने की आस,
कानून के दरवाजे पर न्याय की तलाश।
सोचा पुलिस उसे 'सुरक्षा' प्रदान करेगी,
हाँ, आरोपों ने व्यवस्था की पोल खोली।

जिस हाथ में 'कानून' की जिम्मेदारी थी,
क्या? उसमें ऐसी भी कोई लाचारी थी?
जिसे जनता का रक्षक बनकर रहना था,
वो कम्बख्त आरोपों के घेरे में खड़ा था।

वर्दी की गरिमा पे दाग न लगना चाहिए,
रक्षक को कभी भक्षक न बनना चाहिए।
थाने की चौखट पे जब विश्वास टूटता है,
आमजन का कानून से भरोसा उठता है।
(संदर्भ-गम्हरिया थाने में भी बहू-बेटी असुरक्षित)



संजय एम तराणेकर
इन्दौर-
मो. 98260 25986

लुप्त हुए मिट्टी के कद्रदान

कहाँ गई मिट्टी के वो बर्तन
कहाँ गई खपरैल की मकान

कहाँ गई पेय जल की सुराही
कहाँ गई मिट्टी के वो दीवान

कहाँ गई मिट्टी की सोंधी खुशबू
कहाँ गये मिट्टी के वो कद्रदान

कहाँ गई हाँड़ी की। वो चावल
कहाँ गई मिट्टी के कोठे मकान

कहाँ गई मिट्टी की दूध की कड़ाही
कहाँ गये मिट्टी चुल्हे में पके पकवान

कहाँ गई कबूतर की मिट्टी की भाँड़ी
कहाँ गये मिट्टी के पूजन की धुपदान

कहाँ गई मिट्टी की मोटी दीवारें
कहाँ गई मिट्टी के वर्तन निर्माण

कहाँ गई मिट्टी की गुल्लक हमारी
कहाँ गये मिट्टी के खेल मैदान

कहाँ गई मिट्टी की गाँव की पगडंडी
कहाँ गये मिट्टी के ग्लास की जग्गन

कहाँ गई मिट्टी के बने चबूतरे
कहाँ गई मिट्टी से लीपे खलिहान

उदय कशोर साह
मो पो जयपुर जिला बांका बिहार

आकांक्षा अवसान बिंदु



आकांक्षा अवसान बिंदु के आगे मित्रो शातिलोक है
वहाँ सदा आनंद बरसता और कहीं भी नहीं शोक है
वहाँ हृदय निर्मल मंजुल है, वाणी में मृदुता मिठास है
ईर्ष्या-द्वेष आदि रोगों का शातिलोक में पूर्ण ह्रास है

वहाँ स्वांस संयत, मुख स्मित, गति में मंथर गूढ़ लास्य है
कर में दान, हृदय में करुणा, अधर-अधर पर मृदुल हास्य है
वहाँ नहीं संग्रह करते है, अतः वहाँ पर चोर नहीं हैं
छोटे गृह, सुमनों के भूषण, प्रेमहाट में शोर नहीं है

चलो चलें उस ओर जहां पर कोई छोटा बड़ा नहीं है
है संतोष सभी को कोई धन के पीछे पड़ा नहीं है
आकांक्षा अवसान बिंदु के आगे मित्रो शातिलोक है
वहाँ सदा आनंद बरसता और कहीं भी नहीं शोक है

डॉ. (प्रो.) ब्रज मोहन मिश्र

मगर वो जालिम अभी वहीं है

अभी-अभी तो बाल पके हैं,मगर चाल में ठसक वही है।
अभी तो कँधे जरा झुके हैं,मगर हाथ में पकड़ वही है।।

अभी तो थामा है हाथ तेरा,छुअन की सिहरन अभी वही है।
हजार कलियाँ फिसल पड़ी थी,नजर का जादू अभी वही है।।

अभी तो साँसे जरा थमी हैं,मगर हृदय की धड़क वही है।
उम्र ने छीनी है नमी जरा सी,लबों की चाहत अभी वही है।।

अभी पगों में थकन बढ़ी है,मगर सफर की ललक वही है।
जरा नजर में बड़ी शिकायत,मगर वफ़ा तो अभी वहीं है।।

अभी दिखी तो तुम्हीं सपन में,महक तुम्हारी अभी वहीं है।
तुझे निहारूँ तुझे पुकारूँ,मेरी सदाएँ अभी वहीं है।।

अभी है दामन तर जफ़ा से, दुष्यन्त तन्हाअभी वहीं है।
तीर नजर के कस के मारे,पर वो जालिम अभी वहीं है।।



दुष्यन्त कुमार व्यास
सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्राध्यापक गणित
रतलाम
9713684437

सबकी अपनी अपनी खुशियाँ, अपनी अलख जगाई है,
सबकी अपनी अपनी बगिया, अपने ढंग से सजायी है।

सपने तो सबके अपने, पर सुख दुःख कब तन्हा होते,
तन्हा रहने की चाहत दिल ने, पीर की सोहबत पायी है।

रात रात भर जगते रहना, भोर हुई बिस्तर में जाना,
मानव तन- मानव की योनि, गति उल्लू की भायी है।

ख्वाब कहाँ पूरे हो पाते, जो सोते में देखे जाते,
खुली आँख के स्वप्न हों पूरे, जीवन की सच्चाई है।

संस्कार संस्कृति सभ्यता, इनको धारण करना होगा,
विनम्रता- व्यवहार कुशलता, सफलता की परछाई है।

तेज आँच पर दूध उबलता, बर्तन से बाहर गिर जाता,
धीमी आँच पका कर देखो, सोंधी खुशबू समाई है।



खूब कमाओ धन दौलत पर, मानवता जिन्दा रखना,
अहंकार थोड़ा भी होगा, समझो दानवता भरमायी है।

सन्तानें संस्कारवान हों, धन दौलत से बड़ी उपलब्धि,
आवारा सन्तान हुयी तो, पुरखों की शान गँवायी है।

डॉ अ कीर्ति वर्द्धन मुज़फ़्फ़रनगर

त्रेता की देवियों का दीप पर्व



' बचपन से सुनते आ रहे
आप और हम
दीपावली का पर्व
मनाया जा रहा वर्षों से इसलिए
कि
सीता संग राम आए चौदह वर्ष बाद
अपने घर .....
पर कभी नहीं मनाया गया
उर्मिला के लिए यह त्यौहार
जिन्होंने चौदह वर्ष का बिछोह झेला
पति लक्ष्मण के लिए।
कौशल्या, सुमित्रा, कैकेई ने भी पति बिछोह सहा
और
पुत्रों की पीड़ा के आगे मौन रही।
मंथरा को इतिहास ने दूषित सा परिभाषित किया
कोई नहीं रख पाया आज तक अपनी बेटी का नाम मंथरा....
सच यह भी है
राम के अयोध्या वापसी के बाद पहला दीप जलाने का
अधिकार मंथरा का था
जो नहीं मिल पाया आज तक..
शबरी के बैर, त्रिजटा की तपस्या और मंदोदरी के समर्पण के
बिना दीप पर्व मनाना बेमानी सा है मेरी दृष्टि में ...
इन जैसी अनगिनत त्रेता देवियों ने दीप शिखाओं के पथ पर
अनगिनत दीप जलाएं है
तब जाकर दीप पर्व आज हम मना पाएं है ।
' शुभ हो सभी के लिए दीप पर्व '

डॉसुरेन्द्र मीणा

- कुछ पल सिर्फ मेरे -

होश में मदहोश में,
मस्ती में और मौज में,
सुकून में और शांति में ,

दिल के अरमानों में,
ख्वाबो ख्यालों में,

सुख में और उन्नति में,
संघर्ष और सफलता में,

विषमता और सुगमता में ,
उलझन में और सुलझन में,
कुछ पल सिर्फ मेरे,

दुष्यंतराजसिंह गहलोत
जालोर मारवाड़